विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीयवर्ष, सप्तम पत्र { डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
काव्यदीपिका - द्वितीयशिखा { महाराजा कॉलेज, आरा
लक्षणा का स्वरूप { दिनांक- 09/10/2020

लक्षणया अर्थबोधकः शब्दो लाक्षणिकः, तथा बोद्धयोऽर्थः लक्ष्यः।

लक्षणा स्वरूपमाह विश्वनाथः -

'मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढेः प्रयोजनाद्वासौ लक्षणा शक्तिरर्पिता ॥३॥

मुख्यार्थस्य अन्वयानुपपत्तिग्रहे तदर्थसम्बन्धी-अन्योऽर्थः रूढिप्रयोजनयोरन्तरस्मिन् हेतौ सम्भवति यया प्रतीयते, सा वृत्तिर्लक्षणा नाम।

रूढेः - प्रसिद्धेः, यथा- 'कलिङ्गः साहसिकः' इत्यत्र कलिङ्गशब्दो देशविशेषरूपे स्वाभिधेये-असम्भवन् तद्देशवासिनः पुरुषान् बोधयति। प्रसिद्धिश्च अत्र हेतुः। 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र च ~~मम~~ गङ्गाशब्दः प्रवाहविशेषरूपं स्वाभिधेय-

Scanned with CamScanner

मर्थं बोधयितुमसमर्थः सामीप्यसम्बन्धसम्बन्धिनं तटं बोधयति। हेतुश्चात्र शीतत्वपावनत्वातिशयबोधनरूपं प्रयोजनम्।

'उपकृतं बहु तत्र किमुच्यते? सुजनता प्रथिता भवता परम्।
विदधदीदृशमेव सदा सखे! सुखितमास्स्व ततः शरदां शतम्॥५॥

इयं हि कञ्चिदपकारिणं प्रत्युक्तिरिति मुख्यार्थस्यान्वयानुपपत्तेः वैपरीत्यसम्बन्धेन अपकारादिरूपमर्थं ज्ञापयति। अपकाराद्यतिशयद्योतनञ्चात्र प्रयोजनम्॥

अर्थ-

श्रीकान्तिचन्द्र भट्टाचार्य द्वितीय किरण के अन्तर्गत वाच्यार्थ (अभिधा) का वर्णन करने के बाद अब लक्षणा के स्वरूप के बारे बता रहे हैं- लक्षणावृत्ति के द्वारा अर्थ को बताने वाला शब्द 'लाक्षणिक' कहलाता है। उसके (लक्षणा) द्वारा बोध्य अर्थ को 'लक्ष्य' कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने लक्षणा का स्वरूप इस प्रकार बताया है- 'मुख्यार्थ का बाध होने पर रूढि (प्रसिद्धि) के कारण अथवा किसी प्रयोजन विशेष को सूचित करने के लिए, मुख्यार्थ से सम्बद्ध दूसरा अर्थ जिस शक्ति से बताया जाता है, उसका नाम लक्षणा है। यह शक्ति (लक्षणा) शब्द में अर्पित- आरोपित अर्थात् कल्पित है।

मुख्यार्थ के अन्वय की अनु-

पपत्ति - असङ्गति का ज्ञान होने पर रूढि अथवा प्रयोजन में से किसी भी एक हेतु के रहने से, मुख्यार्थ सम्बन्धी दूसरा अर्थ जिससे प्रतीत हो वह लक्षणा नाम की वृत्ति है।

रूढि का अर्थ है प्रसिद्धि। जैसे 'कलिङ्ग साहिसक' है' यहाँ 'कलिङ्ग' शब्द अपने वाच्य अर्थ देशविशेष में असङ्गत होकर कलिङ्ग देशवासी पुरुषों का बोधक होता है। यहाँ प्रसिद्धि-रूढि-हेतु है। और 'गङ्गायां घोष:' यहाँ गङ्गा शब्द अपने वाच्य अर्थ जल प्रवाह के घोष का आधार होने में असमर्थ होने से, सामीप्य सम्बन्ध से, प्रवाह सम्बन्धी तट को बताता है। तट में शीतत्व पावनत्व के अतिशय अधिकता का द्योतन रूप प्रयोजन ही यहाँ हेतु है।

आपने बहुत उपकार किया, इस विषय में क्या कहा जाए। आपने बड़ा ही सौजन्य दर्शाया। हे मित्र! सदा ऐसा ही करते हुए सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जीओ।

यह किसी अपकारी के प्रति उक्ति है, और मुख्यार्थ के अन्वय की अनुपपत्ति (मुख्यार्थबाध) के कारण वैपरीत्य सम्बन्ध से अपकारादि रूप अर्थ का बोधन कराती है। अपकारादि के आधिक्य का द्योतन करना यहाँ प्रयोजन है।। इति।।

Scanned with CamScanner